बलिवैश्व हमारा दैनिक धर्म कर्त्तव्य

यज्ञ का अर्थ है—पुण्य, परमार्थ। उच्चकोटि का स्वार्थ ही परमार्थ है। उससे लोक कल्याण भी होता है और बदले में अपने को भी श्रेय सम्मान सहयोग आदि का लाभ होता है।

गीताकार ने जीवन में यज्ञीय तत्वज्ञान के समावेश करने पर बहुत जोर दिया है और कहा है कि यज्ञ विधा की उपेक्षा करने पर न लोक बनता है न परलोक। जो यज्ञ से बचा हुआ खाते हैं। वे सब पापों से छूट जाते हैं और जो अपनी उपलब्धियों को अपने लिए ही खर्च कर लेते हैं वे पाप खाते हैं।'

जिस प्रकार नित्य कर्मों में भोजन, शयन, स्नान, मल विसर्जन आदि को आवश्यक माना गया है। उसी प्रकार लोक मंगल के लिए श्रमदान, अंशदान की भी आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में उपेक्षा बरती जाय तो समाज में दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ेंगी और उसका स्तर गिरेगा। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। जिस समाज में वह रहता है उसके प्रभाव से बच नहीं सकता। इसलिए आत्म-कल्याण का प्रयोजन पूरा करने के लिए भी अपनी जीवनचर्या में यज्ञ विधा को सम्मिलित रखकर चलना चाहिए और उसे यदा-कदा नहीं नित्य नियमित रूप से करना चाहिए।

दैनिक बलिवैश्व प्रक्रिया के पाँच विभागों को पाँच 'महायज्ञ' कहा गया है। विशाल आकार-प्रकार से अग्निहोत्रों को जहाँ मात्र 'यज्ञ' नाम से पुकारा गया है वहाँ कुछ मिनटों में पूरी हो जाने वाली क्रिया को जरासी सामग्री लगने वाली क्रिया को महायज्ञ क्यों कहा गया? इसका सीधा-सा उत्तर है कि बलिवैश्व को मात्र कृत्य ही नहीं जीवन नीति का आवश्यक अंग माना गया है और उसे कभी भी न छोड़ने के लिए कहा गया है। जबकि विशाल यज्ञ जन कभी ही होते हैं और उनका प्रयोजन भी सामयिक समस्याओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होते हैं जब कि बलिवैश्व को आवश्यक कर्त्तव्यों की श्रेणी में गिना गया है और उन्हें कर लेने के उपरान्त तब भोजन ग्रहण करने का अनुशासन बनाया गया है। साथ ही उसकी परिणति का प्रतिफल भी बहुत आकर्षक बताया गया है।

यों बलिवैश्व का विधान कुछ बड़ा है और उसे पूरा करने के लिए संस्कृत भाषा के निर्धारित मन्त्रों को भी याद करना पड़ता है। पर उतना न बन पड़े तो उसे अति संक्षेप में रसोई पकाने वाली महिला भी बिना किसी कठिनाई के पूरा करती रह सकती है।

शांखायन, आश्वलायन, पराकर, गोभिल, खादिर आदि गृह्य सूत्रों में तथा शतपथ, गोपथ, आदि ब्राह्मणों में बलिवैश्व की उपयोगिता एवं विधि-व्यवस्था का निर्देश किया गया है। शांखायन, गृह्य सूत्र के अध्याय (२) काण्ड १७, सूत्र ४ में कहा गया है कि जो प्रायः-सायं वैश्व देव यज्ञ करते हैं वे लक्ष्मी, दीर्घजीवन, यश तथा सुसन्तति प्राप्त करते हैं।

इस कल्प की उपेक्षा करने वालों की भर्त्सना करते हुए कहा गया है कि—

> वैश्व देव विहीना ये आतिथ्येन बहिष्कृतया।
> सर्वे ते नरकं यान्ति काक योनि व्रजन्ति च ॥
> —पाराशर स्मृति १।५५

जो बलि वैश्व नहीं करते। अतिथि सत्कार से विमुख रहते हैं। वे नरक में पड़ते और कौए की योनि में जन्म लेते हैं।

बलि वैश्व में सम्मिलित पाँच यज्ञ हैं। उनका परिचय इस प्रकार है।

(१) ब्रह्म-यज्ञ का अर्थ है—ब्रह्मज्ञान आत्मज्ञान की प्रेरणा। ईश्वर और जीव के बीच चलने वाला पारस्परिक आदान-प्रदान।

(२) देव ज्ञान का उद्देश्य है—पशु से मनुष्य तक पहुँचाने वाले प्रगति क्रम को आगे बढ़ाना। देवत्व के अनुरूप गुण, कर्म, स्वभाव का विकास, विस्तार, पवित्रता और उदारता का अधिकाधिक सम्वर्धन।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

(३) ऋषि यज्ञ का तात्पर्य है—पिछड़ों को उठाने में संलग्न करुणार्द्र जीवन-नीति। सदाशयता के सम्वर्धन की तपश्चर्या।

(४) नर यज्ञ की प्रेरणा है—मानवी गरिमा के अनुरूप वातावरण एवं समाज व्यवस्था का निर्माण। मानवी गरिमा का संरक्षण। नीति और व्यवस्था का परिपालन नर में नारायण का उत्पादन। विश्व मानव का श्रेय साधन।

(५) भूत यज्ञ की भावना है—प्राणि मात्र तक आत्मीयता का विस्तार अन्यान्य जीवधारियों के प्रति सद्भावना पूर्ण व्यवहार। वृक्ष वनस्पतियों तक के विकास का प्रयास।

चूँकि बलिवैश्व को भोजन से पूर्ण करने का विधान है इसलिए वे इसे आसानी से कर सकती हैं। चूल्हे में से पहली बनी रोटी के एक-एक टुकड़े को घी और शकर में मिला कर गायत्री मन्त्र बोलते हुए पाँच आहुतियों के रूप में होम देने की क्रिया जहाँ तनिक-सा समय और तनिक-सा शाकल्य लगने के कारण अत्यन्त सुगम है वहाँ घर का वातावरण धार्मिक बनने की दृष्टि से उसका महत्व असाधारण है।

बलिवैश्व में जिन पाँच आदर्शों का प्रतिपादन पाँच महायज्ञों के रूप में किया गया है उन्हें मानवी गरिमा को समुन्नत बनाने वाले 'पञ्चशील' कह सकते हैं बौद्ध धर्म में पंचशीलों का बहुत ही विस्तारपूर्वक वर्णन विवेचन किया गया है। उनका बहुत महत्व-माहात्म्य बताया गया है। इन पंचशीलों को जीवनचर्या एवं समाज व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न रूपों से वर्गीकृत भी किया गया है। इस प्रकार पंचशीलों के वर्ग उपवर्ग प्रकारान्तर से व्यक्ति एवं विश्व की समस्याओं को सुलझाने सर्वतोमुखी प्रगति का द्वार खोलने में महत्वपूर्ण भूमिका सम्पन्न करते हैं।

पारिवारिक पंचशीलों में (१) श्रमशीलता (२) सुव्यवस्था (३) मितव्ययता (४) शिष्टाचार और सहकारिता प्रधान हैं। जिन व्यक्तियों में यह गुण होंगे वे स्वयं सुखी रहेंगे और अपने सम्पर्क क्षेत्र को प्रसन्न तथा समुन्नत रखेंगे। जिन परिवारों में यह सत्प्रवृत्तियाँ व्यवहृत होती होंगी, उसके सदस्यों का समुन्नत सुसंस्कृत होना सुनिश्चित है।

इसलिए जब अवसर हो तब घर के लोगों को एकत्रित करके समझाते रहना चाहिए कि मनुष्य पेट भरने के लिए ही पैदा नहीं हुआ है। उसे दूसरों का भी ध्यान रखना चाहिए और पिछलापन दूर करने तथा सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ाने में योगदान देना आवश्यक कर्त्तव्य मानकर उनके लिए समय और साधन जुटाते ही रहने चाहिए।

साथ ही बलिवैश्व के पाँच महायज्ञों में जिन पंचशीलों की ओर संकेत है उन्हें अपने चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में प्रमुख स्थान देना चाहिए। समग्र सुख शान्ति का यही मार्ग है।

—●—

कवीन्द्र रवीन्द्र ने एक बड़ा मार्मिक गीत रूपक लिखा है—मैं घर-घर भीख माँगने के लिए गाँवों में गया हुआ था। तभी तेरा स्वर्ण रथ मुझे दिखायी पड़ा और मुझे उम्मीद बँधी कि मेरे बुरे दिनों का अब अन्त होने वाला है। तेरा रथ पास आकर रुका और मैं बिना माँगे दान की प्रतीक्षा में तेरे सामने जाकर खड़ा हो गया। तेरी दृष्टि मुझ पर पड़ी और तू मुस्कराता हुआ रथ से उतर आया। मैंने समझा मेरा सौभाग्य मेरे पास आ गया, पर तूने ही मेरे सामने हाथ पसार दिया। कैसा परिहास किया तू ने भी—भिक्षुक से भिक्षा माँगी! मैं बड़ी उलझन में पड़ गया दबे मन से मैंने झोली से एक अन्न का दाना निकाल कर तुझे दे दिया। वह दाना ले कर तू चला गया और मैं निराशा से भर उठा, पर सूर्यास्त के समय जब झोली खाली की, तो उसमें से सोने का एक दाना निकला। मैं जोर-जोर से रोने लगा—"काश, मैंने तुझे सर्वस्व अर्पित कर दिया होता।"

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

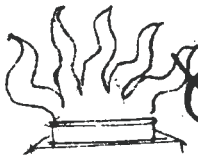

बलि-वैश्व की पाँच आहुतियों से जुड़े पंचशील

बलि–वैश्व की पाँच आहुतियों को 'पंच महायज्ञ' कहा गया है । बोलचाल की भाषा में किसी शब्द के साथ 'महा' लगा देने पर उसका अर्थ बड़ा–बहुत बड़ा हो जाता है । 'यज्ञ' शब्द से भी सामूहिक अग्निहोत्र का बोध होता है । इसके पहले 'महा' शब्द जोड़ देने का अर्थ हुआ कि विशालकाय यज्ञायोजन होना चाहिए । फिर आहार में से छोटे पाँच कण निकाल कर आहुति दे देने मात्र की, दो मिनट में सम्पन्न हो जाने वाली क्रिया से महायज्ञ नाम क्यों दिया गया ? इतना ही नहीं हर आहुति को महायज्ञ की संज्ञा दी गई ऐसा क्यों ? इसका तात्पर्य किसी अत्यधिक विशालकाय धर्मानुष्ठान जैसी व्यवस्था होने जैसा ही कुछ निकलता है । कुछ भी हो इतने छोटे कृत्य का इतना बड़ा नाम अनबूझ पहेली जैसी लगता है ।

वस्तु स्थिति का पर्यवेक्षण करने से तथ्य सामने आ जाते हैं । स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ कृत्य के स्थान पर तथ्य को प्रमुखता दी गयी है । दृश्य के स्थान पर रहस्य को–प्रेरणा प्रकाश को–ध्यान में रखा गया है । साधारणतया दृश्य को कृत्य की प्रमुखता देते हुए नामकरण किया जाता है । किन्तु, बलि–वैश्व की पाँच आहुतियों के पीछे जो प्रतिपादन जुड़े हुए हैं, इन पाँचों को एक स्वतन्त्र यज्ञ नहीं–महायज्ञ माना गया है । स्पष्टीकरण के लिए हर आहुति का एक–एक स्वतन्त्र नाम भी दे दिया है ।

पाँच आहुतियों को जिन पाँच यज्ञों का नाम दिया गया है उनमें शास्त्रीय मतभेद पाया जाता है । एक ग्रन्थ में जो पाँच नाम गिनाए गए हैं दूसरे में उससे कुछ भिन्नता है । इन मतभेदों के मध्य अधिकांश की सहमति को ध्यान में रखा जाय तो इनके नाम– (१) ब्रह्म यज्ञ (२) देव यज्ञ (३) ऋषि यज्ञ (४) नर यज्ञ (५) भूत यज्ञ ही प्रमुख रह जाते हैं । मोटी मान्यता यह है कि जिस देवता के नाम पर आहुति दी जाती हैं, वे उसे मिलती हैं । फलतः वह प्रसन्न होकर यजनकर्ता को सुख–शान्ति के लिए वरदान प्रदान करते हैं ।

'देवता' शब्द का तात्पर्य समझने में प्रायः भूल होती रहती है । देवता किसी अदृश्य व्यक्ति जैसी सत्ता माना जाता है पर वस्तुतः बात वैसी है नहीं । देवों का तात्पर्य किन्हीं भाव शक्तियों से है जो चेतना तरंगों की तरह इस संसार में एवं प्राणियों के अन्तराल में संव्याप्त रहती हैं । साधारणतया वे प्रसुप्त पड़ी रहती हैं और मनुष्य सत्शक्तियों–सद्भावनाओं से–और सत्प्रवृत्तियों से रहित दिखाई पड़ती है । इस प्रसुप्ति को जाग्रति में परिणत करने वाले प्रयासों को देवाराधना कहा जाता है । देव वृत्तियों के विकसित होने का अनुदान ही साधक को ऋद्धियों–सिद्धियों, सफलताओं, सुख–सम्पदाओं जैसी विभूतियों से सुसम्पन्न करता है ।

पंच महायज्ञों में जिन ब्रह्म, देव, ऋषि आदि का उल्लेख है उनके निमित्त आहुति देने का अर्थ इन्हें अदृश्य व्यक्ति मानकर भोजन कराना नहीं, वरन् यह है कि इन शब्दों के पीछे जिन देव–वृत्तियों का–सत्प्रवृत्तियों का संकेत है उनके अभिवर्धन के लिए अशंदान करने की तत्परता अपनाई जाय ।

(१) ब्रह्म यज्ञ का अर्थ है– ब्रह्म–ज्ञान, आत्म–ज्ञान की प्रेरणा । ईश्वर और जीव के बीच चलने वाला आदान–प्रदान ।

(२) देव यज्ञ का उद्देश्य है– पशु से मनुष्य तक पहुँचाने वाले प्रगतिक्रम को आगे बढ़ाना । देवत्व के अनुरूप गुण कर्म स्वभाव का विकास–विस्तार । पवित्रता और उदारता का अधिकाधिक सम्वर्धन ।

(३) ऋषि यज्ञ का तात्पर्य है– पिछड़ों को उठान में संलग्न करुणार्द्र जीवन नीति । सदाशयता के सम्वर्धन की तपश्चर्या ।

(४) नर यज्ञ की प्रेरणा है– मानवीय गरिमा के अनुरूप वातावरण एवं समाज व्यवस्था का निर्माण । मानवीय गरिमा का संरक्षण । नीति और व्यवस्था का परिपालन । विश्व मानव का श्रेय साधन ।

(५) भूत यज्ञ की भावना है– प्राणि मात्र तक आत्मीयता का विस्तार । अन्यान्य जीव धारियों के प्रति सद्भावनापूर्ण व्यवहार । वृक्ष–वनस्पतियों तक के विकास का प्रयास ।

इन पाँचों प्रवृत्तियों में व्यक्ति और समाज की सर्वतोमुखी प्रगति, पवित्रता और सुव्यवस्था के सिद्धान्त जुड़े हुए हैं । उन्हें उदात्त जीवन नीति के सूत्र कह सकते हैं । जीवन–चर्या और समाज व्यवस्था में इन सिद्धान्तों का जिस अनुपात से समावेश होता जाएगा,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उसी क्रम से सुखद परिस्थितियों का निर्माण, निर्धारण होता चला जाएगा । बीज छोटा होता है किन्तु उसका फलितार्थ विशाल वृक्ष बनकर सामने आता है । चिनगारी छोटी होती है अनुकूल अवसर मिलने पर वही दावानल का रूप ले लेती है । गणित के सूत्र छोटे से होते हैं, पर उनसे जटिलताएँ सरल होती चली जाती हैं ।

बलि–वैश्व की पाँच आहुतियों का दृश्य स्वरूप तो तनिक सा है पर उनमें जिन पाँच प्रेरणा सूत्रों का समावेश है उन्हें व्यक्ति और समाज की सर्वतोमुखी प्रगति के आधार भूत सिद्धान्त कहा जा सकता है । इनकी स्मृति हर रोज ताजा होती रहे इसके लिए पाँच आहुतियाँ देकर पाँच आदर्शों की प्रतीक पूजा को महत्वपूर्ण माना गया है । देवता आदर्शों को कहते हैं । प्रस्तुत पाँच महायज्ञों के पाँच अधिष्ठाता देवता माने गए हैं । ब्रह्म यज्ञ के ब्रह्मा, देव यज्ञ के विष्णु, ऋषि यज्ञ के महेश, नर यज्ञ के अग्नि और भूत यज्ञ के वरुण देवता अधिपति हैं । पाँच आहुतियाँ इन्हीं पाँचों के लिए दी जाती हैं ।

इस प्रक्रिया में इन पाँच देवों का पूजन–अनुकूलन का भाव है । यज्ञ कर्ता बलि वैश्व कर्म करते हुए इन पाँचों के अनुग्रह वरदान की अपेक्षा करता है । यह आशा तब निःसन्देह पूरी हो सकती है जब आहुतियों के पीछे जो उद्देश्य निहित है उसे व्यवहार में उतारा जाय । इन्हीं उत्कृष्टताओं का व्यापक प्रचलन अवलम्बन इस पंच महायज्ञ प्रक्रिया का मूलभूत प्रयोजन है । बलि–वैश्व को इन्हीं देव–प्रेरणाओं का प्रतीक प्रतिनिधि माना जा सकता है ।

इस प्रक्रिया में जिन पाँच आदर्शों का प्रतिपादन पाँच महायज्ञों के रूप में किया गया है उन्हें मानवी गरिमा को समुन्नत बनाने वाले 'पंचशील' कह सकते हैं । बौद्ध धर्म में पंचशीलों का बहुत ही विस्तार पूर्वक वर्णन विवेचन किया गया है । इन पंचशीलों को जीवनचर्या एवं समाज व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न रूपों में वर्गीकृत किया गया है । इस प्रकार पंचशीलों के वर्ग, उपवर्ग प्रकारान्तर से व्यक्ति एवं विश्व की समस्त समस्याओं को सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका सम्पन्न करते हैं ।

शरीर रक्षा के पंचशील हैं– (१) सीमित एवं सात्विक आहार (२) स्वच्छ जल का पर्याप्त उपयोग (३) खुली वायु में गहरी सांस (४) समुचित श्रम (५) चिन्ता रहित रात्रि विश्राम ।

मानसिक स्वास्थ्य के पंचशील हैं– (१) खिलाड़ी जैसा दृष्टिकोण (२) अनवरत मुस्कान (३) इन्द्रिय निग्रह (४) काम में मनोयोग एवं गौरव (५) उपलब्धि में सन्तोष–प्रगति में उत्साह ।

समाजिक पंचशील हैं–(१) ईमानदारी (२) नागरिकता की जिम्मेदारी (३) नम्र, शिष्ट एवं मधुर व्यवहार (४) वचन का पालन (५) उदार सहयोग ।

पारिवारिक पंचशील हैं– (१) अभिभावकों के प्रति सहयोग, कृतज्ञता, सेवाभावना (२) छोटों को दुलार, सहयोग (३) दाम्पत्य सम्बन्धों में सघन मैत्री (४) सत्प्रवृत्तियों को सम्पन्नता मानना और उन्हें बढ़ाना (५) सन्तान संख्या न्यूनतम ।

धार्मिक पंचशील हैं– (१) सत्प्रवृत्तियों का समर्थन सम्वर्धन (२) दुष्प्रवृत्तियों से असहयोग, संघर्ष (३) पीड़ा और पतन के निवारण में बढ़–चढ़कर समय, श्रम, सम्पदा का नियोजन (४) उच्च स्तरीय आस्थाओं को दृढ़तापूर्वक अपनाना (५) कर्तव्य पालन में तत्परता, अधिकार पाने में उदासीनता ।

आध्यात्मिक पंचशील हैं– (१) ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था पर अटूट विश्वास (२) आत्मावलम्बन (३) औसत भारतीय स्तर का जीवन, शेष उपलब्धियों का सत्प्रयोजनों में उपयोग (४) जीवन साधना में प्रखर तत्परता (५) आत्मीयता का चरम विस्तार ।

व्यक्ति की महत्ता देखकर ही उसका कथन अंगीकार न करो । हो सकता है कोई सुन्दर व्यक्ति कोई चित्र बनाये और यह भी संभव है कि किसी कुरूप ने सुन्दर चित्र विनिर्मित किये हों ।

उपरोक्त वर्ग विभाजनों में जिन पंचशीलों की चर्चा की गई है वे देखने में एक दूसरे से पृथक् लगते हैं और उन्हें स्वतन्त्र आदर्श गिनने का मन करता है । पर गहराई से देखने पर प्रतीत होगा कि उनमें बलि वैश्व में प्रतिपादित ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, ऋषियज्ञ, नरयज्ञ और भूतयज्ञ में सन्निहित सद्भावनाओं और उत्कृष्ट मान्यताओं का परिस्थितियों के अनुरूप विवेचन दिग्दर्शन मात्र है । मानवी प्रगति, सुव्यवस्था, सुरक्षा एवं सुख, शान्ति के समस्त तत्व इस पंचशील प्रक्रिया में पूरी तरह जुड़े हैं जिन्हें पंच महायज्ञों के नाम से पाँच आहुतियों के साथ जोड़कर रखा गया है । कहना न होगा कि ये आदर्श जिस अनुपात में अपनाये जायेंगे, उसी के अनुरूप व्यक्ति में देवत्व की मनः स्थिति और संसार में स्वर्गीय परिस्थिति का मंगलमय वातावरण दृष्टिगोचर होगा । बलि–वैश्व की प्रेरणाएँ प्रकारान्तर से नवयुग की सुखद सम्भावनाओं का बीजारोपण करती हैं । ✱

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.